Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, OCT-NOV, 2021, VOL-9/48
10.21922/srjhsel.v9i48.8269

आप्रवासी हिन्दी कहानियों में उपभोगतावादी संस्कृति का संबंधों पर प्रभाव

सरिता वर्मा[1], Ph. D. & राहुल कुमार[2], Ph. D.

[1]एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मेरठ कॉलिज, मेरठ

[2]हिंदी विभाग

Paper Received On: 25 NOV 2021
Peer Reviewed On: 30 NOV 2021
Published On: 1 DEC 2021

Abstract

हिन्दी साहित्य का क्षेत्र विस्तृत फलक पर फैला हुआ है। आप्रवासी लेखन को हिन्दी साहित्य के फैलते हुए फलक का विस्तार कहा जा सकता है। आप्रवासी को विदेशों में बसे भारतीयों का साहित्य, भारतवंशी अथवा भारत के पार का रचना संसार आदि नामों से जाना जाता है। इसका अपना एक अलग समाजशास्त्र है। विस्तृत फलक पर साहित्य का विस्तार होने के कारण इसको एक निश्चित सीमा अथवा किसी एक पैमाने में विश्लेषित नहीं किया जा सकता है। प्रवासी साहित्य के अन्तर्गत मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना के साहित्य का अपना समाजशास्त्र है। ब्रिटेन में लिखी गई कहानियाँ उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो भारत से अवसरों और पैसों की तलाश में ब्रिटेन और यूरोप तो चले गए। किन्तु वहाँ की संस्कृति, समाज, वहाँ की नीतियों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाए और खुद को असहज अनुभव करते हैं।

तीव्र औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप पश्चिमी समाज में मानव जीवन अधिकाधिक आराम तलब एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन शैली का आदी हो गया। मशीनीकरण और यंत्रीकरण के कारण बाजार में नए–नए उत्पाद सर्वसुलभ हो गए। मानव जीवन को इन उत्पादों को परोसने के लिए उसके अवचेतन में छिपी लालसाओं को जाग्रत किया गया और इस कार्य को विज्ञापन जगत् ने आसान बनाया। मानव जीवन अधिक से अधिक सुविधाओं को लूटने की दिशा में अग्रसारित हुआ। जिसके कारण वह भौतिकतापूर्ण जीवन शैली और उपभोगतावादी दर्शन को अपने जीवन में अधिक महत्त्व देने लगा। जिससे समाज में काफी उथल–पुथल और टूट–फूट हुई, मानवीय संबंध छिन्न–भिन्न हो गए। पुरानी मान्यताएँ, परंपराएँ और सिद्धान्त सभी संकट के घेरे में आ गए। आप्रवासी कहानी पश्चिमी समाज के उपभोगतावादी दर्शन के कारण संबंधों में आए बदलाव पर गहनता से विचार–विमर्श करने के साथ–साथ ही एक विकल्प ही खोज भी करती है।

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

लक्ष्मीधर मालवीय की कहानी **'छुट्टी का दिन'** उपभोगतावादी संस्कृति के कारण जीवन में आई एकरसता, ऊब और संबंधों में आए ठण्डेपन की पड़ताल करती है– **"सिर्फ एक दिन बल्कि एक दिन भी नहीं आधा दिन। सेक्स कंप्लीट विद डिनर, उसी ने कहा था। क्या वह आश्चर्यजनक नहीं है कि सारी दोपहर नर–मादा खरगोशों की तरह एक–दूसरे की देह से लड़ने–भिड़ने के बाद, पेटभर खाना खाकर, स्टेशन, प्लेटफॉर्म पर होंठ गोल कर हवा में चूमने के तीस मिनट बाद पूछने को यह सवाल उसके मुँह में आया– इनके तीस मिनट पहले नहीं कि क्या मैं उससे प्रेम करता हूँ? मैं, वह, हम सब एक–दूसरे को छूते हैं तो मुलायम और गुनगुने स्पर्श के साथ बंध जाते है। हम सब लोग ईश्वर के विलोम नहीं तो**

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

क्या हैं?''[1] उपर्युक्त उद्धरण निर्द्वंद्व भोग को उजागर करता है। जिसका नायक इस कहानी में स्वयं से प्रश्न करता हैं कि यह प्रेम है या कुछ और। वह स्वयं नहीं जानता और ना ही जानना चाहता है। वह केवल यह जानता है कि उसके जीवन का एक दिन बीत गया। चाहे वह निरर्थक हो या आकर्षण मात्र। यह निरर्थकता बोध तथा संबंधों में आई ऊब रागात्मक प्रवृत्तियों के ह्रास के कारण उत्पन्न हुई। शारीरिक तृप्ति और उपभोगतावादी दर्शन चिर स्थाई नहीं है।

भौतिक सुख–सुविधाओं की चकाचौंध में पश्चिमी जगत् को आत्मसात् करते हुए हमारी संवेदनाएँ मृतप्राय होती जा रही हैं। **'टीस'** कहानी में **जगमोहन कौर** भौतिकतावादी दर्शन के कारण संबंधों में आई दरार को रेखांकित करती हैं। **'टीस'** कहानी में एक मासूम बच्चा विजय अपने माता–पिता के व्यवहार एवं भाई–बहन की मृत्यु के कारण एक अज्ञात भय एवं मानसिक यातना का शिकार हो जाता है। परिवार में विजय की इस समस्या को समझने का किसी के द्वारा कोई प्रयास भी नहीं किया जाता और उसके ऊपर पढ़ाई के लिए निरन्तर दबाव डाला जाता रहा। आज के समय में भौतिकवादी जीवन शैली मनुष्य के ऊपर पूरी तरह से काबिज़ हो चुकी है। जहाँ एक–दूसरे के दुःख–दर्द हमें बहुत बौने लगते हैं। **'टीस'** कहानी का यह उद्धरण इस स्थिति की सम्यक् पर पड़ताल करता है– **''कुल मिलाकर यही तथ्य निकला कि यदि बच्चा पढ़ाई में कमजोर था, तो उनके पास ट्यूशन के लिए क्यों नहीं भेजा गया। अब कुछ नहीं हो सकता। हाँ, केवल हिन्दी की अध्यापिका श्रीमती गुंजन ने मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनी और विजय के प्रति सहानुभूति दिखाई। केवल टीचर से सद्भावना के शब्द सुन मैं धन्य हुई। इस भौतिक सुखों के युग में दूसरों के कष्ट कितने बौने होकर रह गए हैं।''** इस उद्धरण के माध्यम से लेखिका ने उपभोगतावादी दर्शन के कारण अमानवीय होते समाज की क्रूर तस्वीर को शब्दों के माध्यम से समाज के सामने उकेरा है।

हिमांशु जोशी ने उपभोगतावादी संस्कृति से उत्पन्न भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के द्वंद्व पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि **''आप्रवासी साहित्य में सबसे बड़ी समस्या है– सांस्कृतिक आघात की। पूर्व में जैसी मान्यताएँ हैं, पश्चिमी संसार में ठीक उसके विपरीत घटित होता है। रूढ़िवादी मनोवृत्ति के लोगों से इसे सहज की सह पाना कठिन होता है।''**[2]

सुरेन्द्रनाथ तिवारी की कहानी **'उपलब्धियाँ'** पश्चिमी जगत् की प्रतिस्पर्धात्मक और धन–लिप्सा के कारण संबंधों में आए बिखराव और ठण्डेपन को उजागर करती है। बेटे के पास अपने पिता के अन्तिम संस्कार तक के लिए वक्त नहीं है वह अपने पिता के अन्तिम संस्कार से अधिक 'दो मिलियन' के कॉन्ट्रेट के लिए चिंतित है– **''संजय के स्वर में बड़ी घबराहट थी, अनुनय थी सुरेन्द्र जी मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, क्या–क्या करना होगा, डेड बॉटी के साथ और मुझे परसों ही मैक्सिको जाना है, मैंने ही निगोशियेट किया है।'' डेड बॉडी वाली बात पर एक वितृष्णा–सी होती है मन में। एक कसैलापन, एक आक्रोश पता नहीं किस पर, पता नहीं क्यों?''**[3]

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपर्युक्त उदाहरण पश्चिमी जगत् के निर्मम सत्य का अंकन करता है। पिता की मृत्यु ने उसके कामों में उलझन पैदा कर दी है। पिता के मृत शरीर को वह मात्र डेड बॉडी समझकर इस तरह प्रतिक्रिया व्यक्त करता है जैसे वह उसका पिता नहीं बल्कि कोई अजनबी व्यक्ति हो। उसके शब्दों में जो घबराहट है वह पिता की मृत्यु के कारण नहीं बल्कि दो मिलियन के कॉन्ट्रेट के छूट जाने को लेकर है। यह पश्चिमी जगत् के यथार्थ और कटु सत्य को चित्रित करता है। संबंधों में आए बदलाव, उपभोगतावादी जीवन–शैली और पैसा कमाने की अथाह चाह के कारण है।

पश्चिमी जगत् का युवा अपने अकेलेपन और दिशाहीनता को संभोग में डुबो देना चाहता है तथा अपने जीवित रहने के पीछे तर्क ढूँढता है। **विजय चौहान** की कहानी **'शाम के वक्त'** में लेखक ने इसी समस्या का अंकन किया है– **''बहुत टेढ़ा सवाल है क्या संतुलित है और क्या नहीं। भावनाओं का दमन कर सदा उपयुक्त बातें करना मेरी समझ में संतुलन नहीं इसलिए मेरी पड़ोसन, अपनी किताब बंद करो। मेरे दरवाजे पर दस्तक दो। मैं दरवाजा खोल तुम्हे अपनी बाँहों में ले लूँगा। तुम्हारा एकाकीपन और मेरी दिशाविहीनता एक–दूसरे को निरस्त कर देगी। हम दोनों को साथ–साथ ज्ञान होगा कि हमारे जीवित रहने के पीछे कौन–सा तर्क है।''**[4]

पश्चिमी समाज का युवा उपभोगतावादी संस्कृति के सहारे भी अधिक समय तक सुकून नहीं पा सकता। उपर्युक्त उद्धरण इसकी सटीक व्याख्या करता है। संतुलित और असंतुलित की परिभाषा ही कुछ नहीं है। पश्चिमी जगत् संवेदनहीन हो चुका है। **विशाख ठाकर** ने अपनी कहानी **'पेंशेंट पार्किंग'** में चिकित्सा जगत् की इसी संवेदनाहीनता का चित्रण करते हुए लिखा है कि **''दो बड़े डॉक्टर मेरी धड़कने लगातार ए०के०जी० के मॉनीटर में चलती देखकर राहत की साँस लेते हैं कि उनका प्रोजेक्ट खत्म होने से पहले मैं मरी नहीं। अभी कुछ जिन्दा हूँ। मैं इनके प्रयोग का, इनके प्रोजेक्ट का एक अहम् हिस्सा बन गयी हूँ। ये जब किसी भी बड़े वैज्ञानिक सम्मेलन में जाएँगे तो वहाँ मेरे रोग के हर पहलू की चर्चा करेंगे। मेरी हर साँस का जिक्र होगा। मेरे शरीर के काटे हुए कोषों की तस्वीरों को वे ध्यान से देखेंगे सिर्फ मैडिकल हिस्ट्री का एक दिलचस्प केस समझकर। मेरा कहीं कोई नाम नहीं होगा। मैं इनके रिकॉर्ड बुक में रह जाऊँगी सिर्फ पेशेंट नंबर 312 बनकर।''**[5]

एक पेशेंट का केवल मैडिकल हिस्ट्री का एक केस बनना तथा रिकॉर्ड बुक में उसकी उपस्थिति 312 नम्बर से होना, पश्चिमी समाज की संवेदनहीनता का ही सूचक है। डॉक्टर जिसे समाज में भगवान का दर्जा दिया जाता है वह किस तरह जड़हीन व्यवहार का परिचय देता है। उसके लिए मरीज मात्र एक 'प्रोजेक्ट' हैं। उपर्युक्त स्थिति संबंधों में आए बदलावों को ही उजागर करती है।

पश्चिमी जगत् की मानवीयता को तार–तार करती **अभिमन्यु अनंत** की कहानी **'मातमपुर्सी'**, जहाँ व्यक्ति के मरने पर भी लोग जुआ खेलकर पैसा कमाने की फिराक में रहते हैं। यह पश्चिमी जगत् का कटु सत्य है जहाँ मानवीयता का तेजी से ह्रास हो रहा है। क्या यही पश्चिमी समाज, समाज की नियति

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

बन गयी है। उद्धरण देखें– **''घर के भीतर से सफेद कमीज और धोती पहने एक अधेड़ व्यक्ति सामने आ गया। उसने लोगों के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करके विनती भरे शब्दों में कहा– देखिए, मैं आप सभी लोगों से विनती कर रहा हूँ। हमारे घर के भीतर मेरी माँ का शव है। हम लोग उनकी आत्मा की शान्ति के लिए वेद–मंत्रों का पाठ कर रहे हैं। मेरे पिताजी का आदेश है कि हमारे घर इस दुःखद मौके पर जुआ न खेला जाए। आप लोग बुरा न मानें। इसे तत्काल बंद कर दें।''**[6]

मॉरीशस की कहानियों के संबंध में हिमांशु जोशी की टिप्पणी सटीक बैठती है। वे मॉरीशस के इतिहास को चित्रकारों से भरा गूंगा इतिहास कहते हैं। पश्चिम में रह रहे साहित्यकारों की रचनाओं में आधुनिक सभ्यता के अभिशाप प्रश्न चिह्न बनकर उभरे हैं। **अभिमन्यु अनंत** की कहानी **'मातमपुर्सी'** जीवन मूल्यों में आए इन्हीं बदलावों को बेबाकी से चित्रित करती है।

उपभोगतावादी जीवन शैली ने मनुष्य को अपने हाथ की कठपुतली बना दिया है। व्यक्ति इन सुख–सुविधाओं का इतना आदि हो चुका है कि इसके बिना वह अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। **तेजेन्द्र शर्मा** की कहानी **'अभिशप्त'** इसी जीवन शैली को उजागर करती है। एक उदाहरण इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है– **''तुम चाहकर भी इस जीवन की सुविधाओं को छोड़ नहीं सकते। तुम उन लोगों में हो जो रोज शाम को शराब के गिलास पर सवार होकर अपने देश चले जाते हैं और सुबह होते ही ठंडी रोटी खाकर पेयर हाउस पहुँच जाते हैं।''**[7] मनुष्य उपभोगतावादी संस्कृति में किस प्रकार निराश्रित और आत्मकेन्द्रित हो जाता है। यह उद्धरण इसका हवाला देता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि उपभोगतावादी दर्शन में पश्चिमी समाज के संबंधों को बहुत गहनता से प्रभावित किया है तथा उनमें आमूल–चूल परिवर्तन भी किया है। इस परिवर्तन में सकारात्मक के बजाय नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होते हैं, जिसने मानव जीवन शैली को बहुत गहराई तक प्रभावित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

लक्ष्मीधर मालवीय– छुट्टी का एक दिन, पृ० 75
जगमोहन कौर– टीस, पृ० 126
हिमांशु जोशी– नए क्षितिजों की तलाश, पृ० 13
सुरेन्द्र तिवारी– उपलब्धियाँ, पृ० 261
विजय चौहान– शाम का वक्त, पृ० 166
विशाख ठाकर– पेशेंट पार्किंग, पृ० 194
अभिमन्यु अनंत– मातमपुर्सी, पृ० 292

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language